UGC NET Paper= 2.. Sanskrit

Filler Form

YouTube

🎯JRF का जलवा 🔥🏆

दर्शन - साहित्य का विशिष्ट अध्ययन

UNIT=4

Daily = 6 pm

Class-35

By=NIDHU CHAUDHARY

B.A., M.A., P.G.D.C.A., now Ph.d running

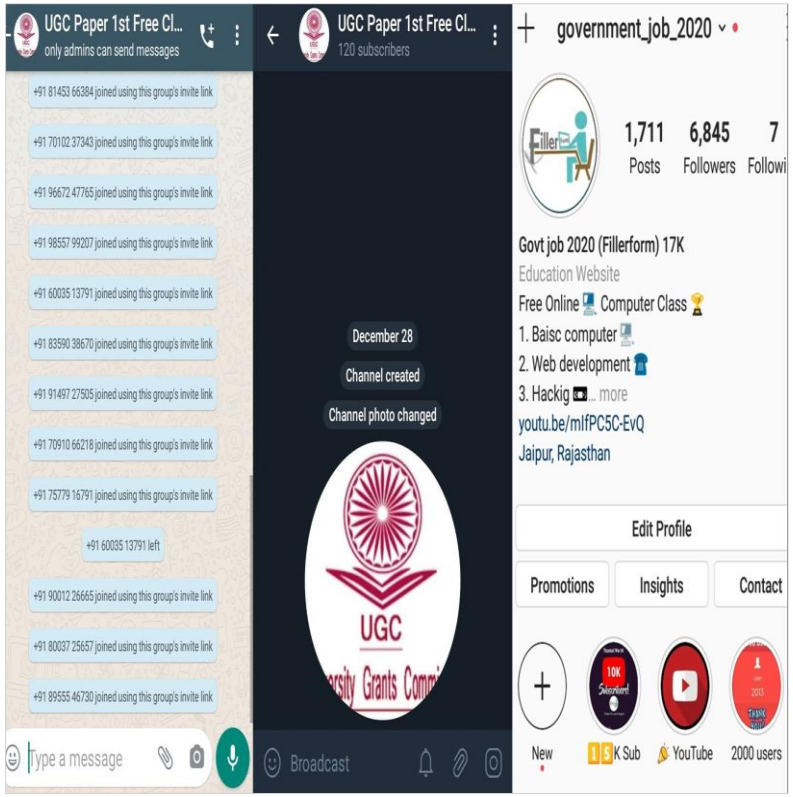
UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages
UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers
government_job_2020
1,711 Posts
6,845 Followers
Govt job 2020 (Fillerform) 17K
Education Website
Free Online Computer Class
1. Baisc computer
2. Web development
3. Hackig ... more
youtu.be/mIfPC5C-EvQ
Jaipur, Rajasthan
Edit Profile
Promotions
Insights
Contact
December 28
Channel created
Channel photo changed
Type a message
Broadcast
New
K Sub
YouTube
2000 users

Filler Form
LATEST UPLOADS
UGC NET Paper 1st
Teaching Aptitude
"Level of Teaching"
LEARNING MATERIAL
Quizzes
Notes
Sample Papers
UGC NET 100%
Off Free Class
Free Notes
Live Class
100% OFF
5000+MCQ+PYQ
Free Books
fillerform

8209837844
NET Free Class
www.ugc-net.com
09:00 AM- GK Class
11:00 AM- Paper 1st
12:00 PM - Hindi 2nd
01:00 PM- History 2nd
02:00 PM- Paper 1st MCQ
03:00 PM- Commerce 2nd
06:00 PM- Sanskrit 2nd
08:00 PM - Computer 2nd
09:00 PM- Paper 1st DI
Fillerform

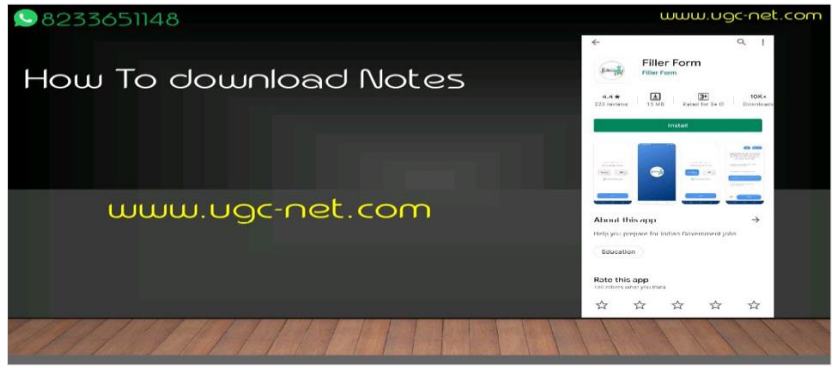
8233651148
www.ugc-net.com
How To download Notes
www.ugc-net.com

UGC NET PAPER = SANSKRIT...
JRF का जलवा
13th march 2022
Google Meet
Time = 6 pm
NIDHU CHAUDHARY
B.A., M.A., P.G.D.C.A., now Ph.d running

UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages

+91 81453 66384 joined using this group's invite link

+91 70102 37343 joined using this group's invite link

+91 96672 47765 joined using this group's invite link

+91 98557 99207 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 joined using this group's invite link

+91 83590 38670 joined using this group's invite link

+91 91497 27505 joined using this group's invite link

+91 70910 66218 joined using this group's invite link

+91 75779 16791 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 left

+91 90012 26665 joined using this group's invite link

+91 80037 25657 joined using this group's invite link

+91 89555 46730 joined using this group's invite link

Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers

December 28

Channel created

Channel photo changed

Broadcast

government_job_2020

1,711 Posts

6,845 Followers

7 Followi

Govt job 2020 (Fillerform) 17K

Education Website

Free Online Computer Class

1. Baisc computer

2. Web development

3. Hackig ... more

youtu.be/mIfPC5C-EvQ

Jaipur, Rajasthan

Edit Profile

Promotions | Insights | Contact

New

15K Sub

YouTube

2000 users

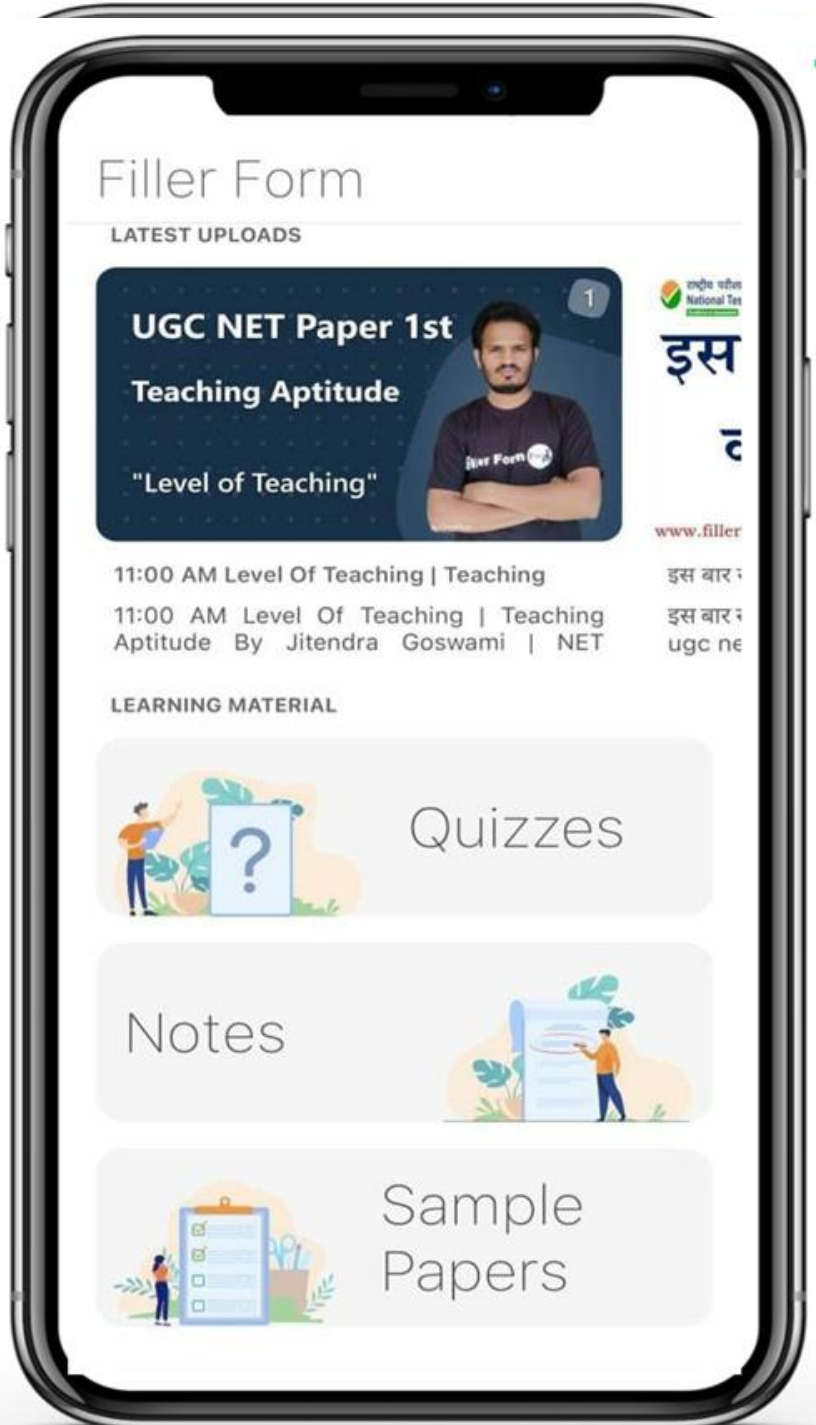

UGC NET 100% Off Free Class

Free Notes

Live Class

100% OFF

5000+MCQ+PYQ

Free Books

fillerform

8209837844

www.ugc-net.com

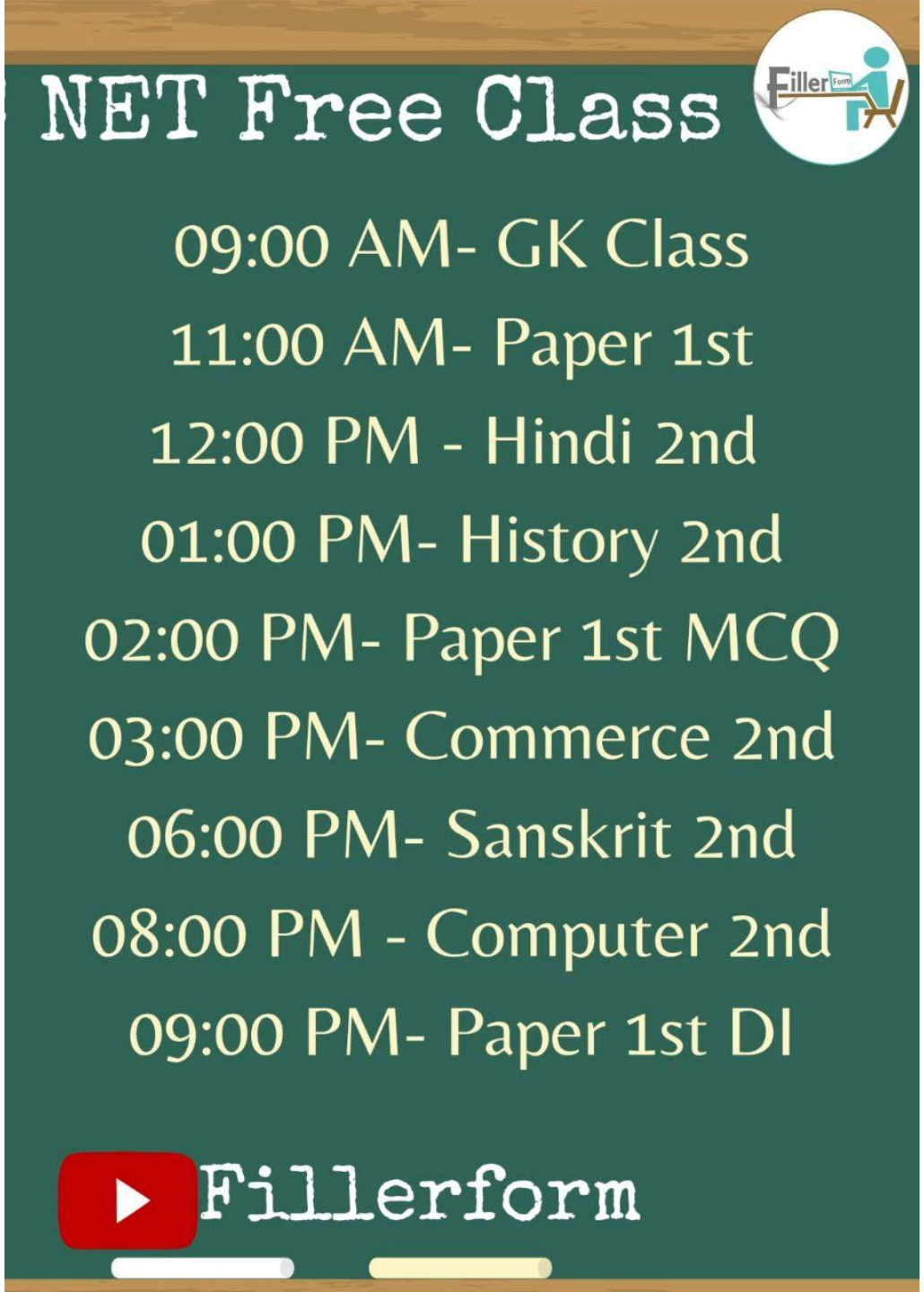

8233651148

www.ugc-net.com

How To download Notes

www.ugc-net.com

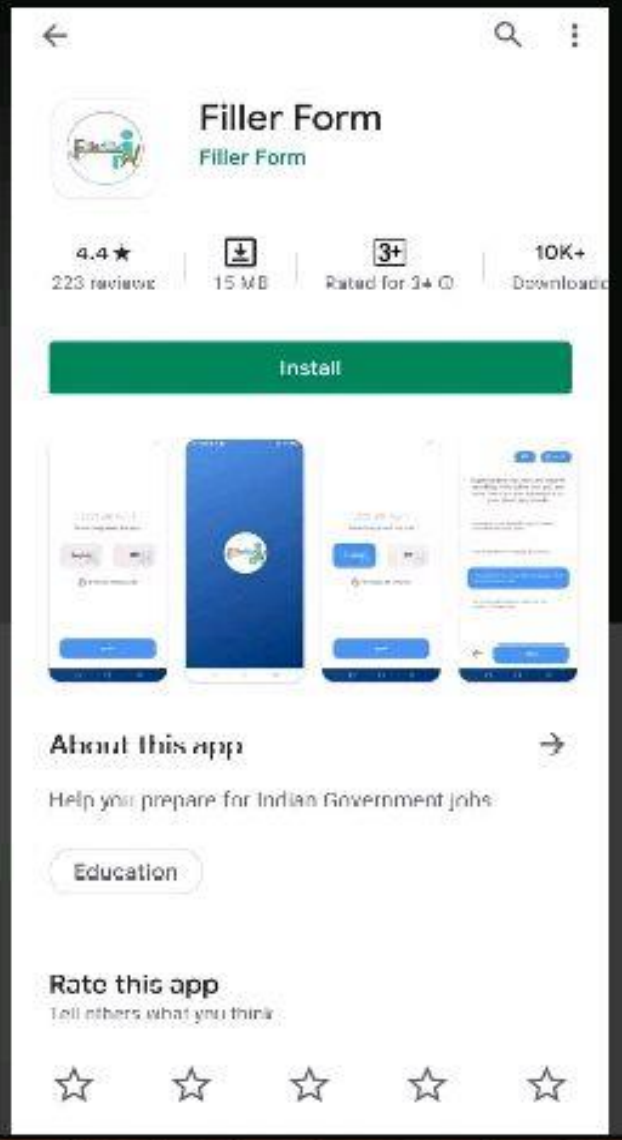

UGC NET PAPER = SANSKRIT...

🎯 JRF का जलवा 🔥 🏆

13th march
2022

Time =
6 pm

Google Meet

NIDHU CHAUDHARY

B.A., M.A., P.G.D.C.A., now Ph.d running

Home work Answer.....

15. प्रमाणस्य लक्षणं वर्तते -

(A) यथार्थज्ञानम्
(B) प्रमाकरणम्
(C) उपमितिकरणम्
(D) परामर्शज्ञानम्

16. न्यायदर्शने प्रथमनिर्दिष्टः पदार्थः कः ?

(A) प्रमेयम्
(B) प्रयोजनम्
(C) संशयः
(D) प्रमाणम्

Today's Topic...

- उपमान प्रमाण
- शब्द प्रमाण
- अर्थापत्ति प्रमाण
- अभाव प्रमाण
- परामाण्यवाद

8209837844 www.ugc-net.com

॥उपमान प्रमाण॥

लक्षण-

"अतिदेशवाक्यार्थस्मरणसहकृतं गोसादृश्यविशिष्टपिण्डज्ञानमुपमानम्"

अतिदेश वाक्य के अर्थ का स्मरण करने के साथ **'गोसादृश्यविशिष्ट पिण्ड'** (गाय की समानता से युक्त शरीर) अर्थात् **'गवय'** का जो ज्ञान होता है, वही 'उपमान' प्रमाण कहलाता है। **जैसे-** गवय (नीलगाय) को ना जानने वाला व्यक्ति किसी आदमी से **'यथा गौस्तथा गवयः'** (जैसी गाय होती है वैसा ही गवय होता है) यह वाक्य सुनकर जब कभी वह वन में जाता है और **'यथा गौस्तथा गवयः'** इस वाक्य के स्मरण के साथ **'गोसादृश्यविशिष्ट पिण्ड'** गाय की समानता से युक्त आकृति को देखकर

8209837844 www.ugc-net.com

उस अतिदेश वाक्य के अर्थ का जब उसको स्मरण हो जाता है, तब उस वाक्यार्थ के स्मरणसहित जो उसे **'गोसादृश्यविशिष्ट पिण्ड'** का ज्ञान होता है, तब वही 'ज्ञान', **'उपमिति'** (संज्ञा-संज्ञिसम्बन्ध बोधरूप फ़ल) का **'करण'** कहलाता है। उसी ज्ञान को 'उपमान' प्रमाण कहते हैं। **'गोसादृश्यविशिष्ट पिण्ड'** का ज्ञान होने के बाद **'अयमसौ गवयशब्दवाच्य:'** यह आकृति ही **'गवय'** शब्द का वाच्यार्थ है। इस प्रकार से **'संज्ञा-संज्ञि-सम्बन्ध'** की जो प्रतीति होती है, वह प्रतीति ही उपमान प्रमाण का फ़ल है।

उपमान के तीन प्रकार-

(1)सादृश्यविशिष्टपिण्डज्ञान (2) असाधारणविशिष्ट (3) वैधर्म्यविशिष्ट।

8209837844 www.ugc-net.com

॥शब्द प्रमाण॥

लक्षण- "आप्तवाक्यं शब्दः"

आप्तपुरुष के वाक्य को 'शब्द' प्रमाण कहते हैं। जो पदार्थ जैसा है उस पदार्थ का वैसा ही उपदेश करने वाला पुरुष **'आप्त'** कहलाता है। और उसके वाक्य को **'शब्द'** प्रमाण कहा जाता है।

वाक्य का लक्षण- "वाक्यं त्वाकाङ्क्षायोग्यतासन्निधिमतां पदानां समूहः"

आकांक्षा, योग्यता और आसत्ति से युक्त पदसमूह को वाक्य कहते हैं।

आकाङ्क्षा- "गौरश्वः पुरुषो हस्ती" गाय, घोड़ा, मनुष्य, हाथी- ये पद वाक्य नहीं कहलाते, क्योंकि इन पदों में परस्पर आकांक्षा नहीं है।

8209837844 www.ugc-net.com

योग्यता- **"वह्निना सिञ्चेत"** अग्नि से सिंचन करे,- इस पदसमूह को भी वाक्य नहीं कह सकते क्योंकि अग्नि और सेचन में परस्पर अन्वित होने की योग्यता नहीं है ।

सन्निधि- इसी प्रकार एक-एक प्रहर के बाद एक साथ उच्चारण न किये गये **"गाम् आनय"** गाय को ले आओ इत्यादि पदसमूह में 'सन्निधि' के अभाव के कारण वाक्य नहीं कहा जा सकता है ।

पद का लक्षण- **"पदं च वर्णसमूहः"** वर्णसमुदाय को पद कहते हैं । यहां पर समूह का अर्थ है – एक ज्ञान का विषय होना

8209837844 www.ugc-net.com

॥अर्थापत्ति प्रमाण॥

मीमांसक अथवा वेदान्तियों के अनुसार **'अर्थापत्ति'** भी एक पृथक् प्रमाण है । जिसका लक्षण इस प्रकार है - **"अनुपपद्यमानार्थदर्शनात् तदुपपादकीभूतार्थान्तरकल्पनम् अर्थापत्तिः"** अनुपपद्यमान अर्थ को देखकर उसके उपपादक अर्थ की कल्पना करना 'अर्थापत्ति' कहलाती है। जैसे- 'देवदत्त दिन में नहीं खाता है, परन्तु मोटा है' । यह देखने पर या सुनने पर उसके रात्रिभोजन की कल्पना कर ली जाती है क्योंकि दिन में न खाने वाले का मोटा होना, रात्रिभोजन किये बिना उपपन्न नहीं हो सकता । अतः अन्यथा (रात्रिभोजन के बिना) पीनत्व की अनुपपत्ति ही उसके रात्रिभोजन में प्रमाण है ।

8209837844 www.ugc-net.com

इस प्रकार मीमांसक या वेदान्ती के कहने पर नैयायिक **'रात्रिभोजन'** को अनुमान का विषय मानता है। क्योंकि 'रात्रिभोजन' तो अनुमान का विषय है। अर्थात् अनुमान से ही उसके रात्रिभोजन करने का ज्ञान हो जाता है। इसलिये 'अर्थापत्ति' को अलग से स्वतंत्र प्रमाण मानने की आवश्यकता नहीं है। देवदत्त के रात्रिभोजन का अनुभान यह होगा- **"अयं देवदत्तः रात्रौ भुङ्क्ते दिवा अभुञ्जानत्वे सति पीनत्वात्"** यह देवदत्त रात में भोजन करता है **(प्रतिज्ञा)**। दिन में भोजन न करने पर भी पुष्ट रहने से **(हेतु)**। **"यस्तु रात्रौ न भुङ्क्ते, नाऽसौ दिवाभुञ्जानत्वे सति पीनः, यथा- दिवारात्रौ च अभुञ्जानः अपीनः, न चायं तथा, तस्मान्न तथेति"** जो रात

8209837844 www.ugc-net.com

में भोजन नहीं करता है और दिन में भी भोजन नहीं करता है वह पुष्ट नहीं हो पाता है। **जैसे-** न दिन और रात में भी भोजन न करने वाला दुबला होता है। यह **"व्यतिरेकव्याप्ति"** और उसका **(उदाहरण)** है। यह देवदत्त वैसा दुबला नहीं है **(उपनय)**। इसलिये वैसा यानी दिन और रात में भोजन न करने वाला नहीं है **(निगमन)**। अर्थात् रात्रि में भोजन करता है। इस प्रकार **"केवलव्यतिरेकी"** अनुमान द्वारा ही रात्रिभोजन की प्रतीति हो जाती है।

8209837844

www.ugc-net.com

॥अभाव॥

'भाट्ट मीमांसक' तथा 'वेदान्ती' 'अभाव' **(अनुपलब्धि)** प्रमाण को पृथक् मानते हैं। क्योंकि 'अभाव पदार्थ' (प्रमेय) के ज्ञान के लिये अभाव प्रमाण को अवश्य स्वीकार करना चाहिए। क्योंकि घटादि पदार्थ की अनुपलब्धि से घटादि पदार्थ के अभाव का ग्रहण होता है। परन्तु नैयायिकों के अनुसार यह बात नहीं है। 'यदि यहां पर घट होता तो भूतल की तरह

8209837844 www.ugc-net.com

दिखाई देता' । इस प्रकार तर्क के साथ अनुपलब्धि से युक्त **'प्रत्यक्षप्रमाण'** से ही 'अभाव' पदार्थ का ग्रहण हो जाता है । अतः नैयायिकों के अनुसार अभाव पदार्थ के ज्ञान के लिये अलग से 'अभावप्रमाण' मानने की कोई आवश्यकता नहीं है ।

8209837844 www.ugc-net.com

प्रामाण्यवाद (अनुभवत्वम्)

'प्रमा' के **'करण'** को 'प्रमाण' कहते हैं- **'प्रमाकरणंप्रमाणम्'** 'प्रमा' का अर्थ है 'यथार्थ अनुभव' जैसे प्रमा' के **'करण'** अर्थ में 'प्रमाण' शब्द का प्रयोग होता है, वैसे ही 'प्रमा' के अर्थ में भी 'प्रमाण' शब्द का प्रयोग किया जाता है। 'प्रामाण्यवाद' में **'प्रामाण्य'** का अर्थ है **'प्रामाण का भाव'** अर्थात् **'ज्ञान की यथार्थकता'** । अतएव तर्कभाषाकार ने कहा है- **"ज्ञानस्य याथार्थ्यलक्षणम्प्रामाण्यम्"** 'ज्ञान की यथार्थकता' ही ज्ञान का 'प्रामाण्य' है। **"प्रामाण्यसम्बन्धी वादः-प्रामाण्यवादः"** अर्थात् 'ज्ञान' के 'प्रामाण्य' का विचार ।

8209837844 www.ugc-net.com

विभिन्न दर्शनों के अनुसार प्रामाण्य तथा अप्रामाण्य-

सांख्य -	स्वतः प्रामाण्य,	स्वतः अप्रामाण्य
न्याय-वैशेषिक-	परतः प्रामाण्य,	परतः अप्रामाण्य
मीमांसा -	प्रामाण्य स्वतः,	अप्रामाण्य परतः
वेदान्त -	प्रामाण्य स्वतः	अप्रामाण्य परतः
बौद्ध -	प्रामाण्य परतः,	अप्रामाण्य स्वतः
जैन -	प्रामाण्य एवं अप्रामाण्य दोनों कहीं स्वतः कहीं परतः	

Next class....

* प्रमेय और उसके भेद *

Home work Question....

19. तर्कभाषायाः प्रणेता विद्यते?

(A) अक्षपादगौतम (B) वात्स्यायन

(C) वाचस्पति (D) केशव मिश्र

20. लक्षितस्य लक्षणमुपपद्यते न वेति विचारः उच्यते-

(A) परीक्षा (B) लक्षणम्

(C) उद्देश्यः (D) विमर्शः

FEEDBACK

- आपको ये क्लास कैसा लगा ??

📝Comment box में अपना comment कर के Next Class में आपका solution पाए 📑 📝

For More Information….

www.ugc-net.com

/Fillerform

/Fillerform

/Fillerform

info@fillerform.com

8209837844

जिसने भी खुद को खर्च किया है,
DUNIYA ने उसी को GOOGLE पर SEARCH किया है।।
www.fillerform.com
fillerform
2

THANK YOU